mardi 19 février 2013

HIN2B-09C

(Initiation à la littérature hindi moderne)

Cours-4

दर्द

मोहनदास नैमिशराय (1ère partie)

अंधेरा घिर आया था । हरभजन घर नहीं लौटा था । हरदेइ घर के बाहर दरवाज़े के पास खड़ी थी । उसकी आँखें हर उस आदमी को देखती थीं, जो सड़क से गली में प्रवेश करता था । बार बार यही क्रम दोहराती थी वह । आँखें थक चली थीं उसकी, पर प्रतीक्षा अभी शेष थी । खाली सी हुई आँखों में उदासी भर आई थी । थकान सो पहले से ही थी । आकाश में बादल थे और परिवेश में उमस । एक दिन आदमी गलीमें आता और अपने अपने घर में चला जाता । घर घर में बच्चों की मिलीजुली आवाज़ें गूँजती, चूड़ियाँ खनकती, बर्तन बजे और शिकायतके साथ सम्मोहन की अजीब गंध बैठकखानों, आँगनों दालानों और छतों के आसपास उभर आती थी. बस्ती के प्रत्येक घर में स्पंदन था और गहमागहमी थी। वह अकेला घर था और सुमन रसोई में दाल बीन रही थी। घर की दीवारें शांत थीं । थोड़ी बहुत आवाज़ थी तो केवल सीलिंग फ़ैन की ।

घर में तीन प्राणी थे । वे तीनों ही अजीब सी चुप्पी लिये अपने-अपने कार्य में व्यस्त थे । आकाश का कल पेपर था । वह सामान्य ज्ञान की पुस्तक में खोया था । सुमन को भोजन तैयार करना था इसलिये रसोई में उसने अब दाल पानी में भिगो दी थी । और बाहर हरदेइ मानी हरभजन की माँ अभी भी बेटे के इंतजार में थी । अंधेरे में ज़मीन का कोना कोना घिरने लगा था। बस्ती में प्रकाश व्यवस्था न थी । सिर्फ़ घरों के बाहर आती उजाले की रेखाओं ओर धुएँ की लकीरों से लगता था कि यह भी कोई बस्ती है । शहर की पश्चिम दिशा में यह बस्ती ज़मीन के लगभग पाँच एकड़ में विराजमान थी । प्रकाश की अव्यवस्था, गली के खड़ंजे की उबड़ खाबड़ स्थिति और मकानों की पलास्तर उखड़ी दीवारें इस बात का संकेत दे रही थीं कि सरकार द्वारा घोषित गरीबी रेखा से थोड़ा सा ऊपर के लोग इस बस्ती में रहते थे । इनके भी सपने थे । भले ही वे पूरे न हुए हों ।

आकाश को पढ़ते हुए थोड़ा थकान-सी महसूस हुई, वह किताब एक तरफ़ रख पानी पीने के लिये रसोई में चला गया । सुमन अब तक अंगीठी पर पतीली रख दाल छोंक चुकी थी । बेटे को सामने देखा तो घड़े को तिरछा उंडेल कर गिलास में पानी डाल उसे दे दिया । पानी पीते हुए पूछ बैठा वह, पिताजी अभी तक नहीं लौटे आफ़िस से ?

उदासी से डूबा स्वर उभरा था माँ के गले से, नहीं ।

बेटे ने फिर सवाल किया था, "पर क्यों माँ, अब तक तो उन्हें आ जाना चाहिये ।"

सुमन इतना ही कह सकी, "हाँ बेटे ।"

आकाश वहाँ से हटकर बाहर गया था । हरदेइ अभी भी दीवार से पीठ लगाए हरभजन की बाट जोह रही थी। आकाश के पैरों की आवाज़ से उसका ध्यान बंटा । तभी वह बोल उठा,

"बड़ी माँ, कमरे के भीतर आ जाओ । पिताजी आते ही होंगे बस ।"

हरदेइ ने जैसे अपने आपको दिलासा दी थी,

"हाँ बेटे तू ठीक कहवै है । बस्स आत्ते ही होंगे तेरे पिताजी । पर मन नहीं माना था । इसलिए पूछ बैठी, टेम कितना हो गया ? "

आकाश ने दीवार पर लगी घड़ी में समय देखा। आठ बजे थे। दोनों हाथ की अंगुलियों से बतला दिया था। समझ कर बोल उठी थी वह, "आठ?"

आकाश के मुँह से हुँकार निकली थी। फिर कहा था उसने, "घना टैम हो गया।"

इस बार आकाश चुप रहा। वह पुनः कमरे में आ गया था। सामान्य ज्ञान की किताब उठाकर वह फिर से पढ़ने लगा था।

सुमन अभी रसोई में ही थी। दाल में जोरों से फड़के पड़ने लगे थे। इस बीच उसने आटा भी गूंद लिया था। हरदेइ कमरे में दरवाज़े के बीचोंबीच बैठ गई थी। टाँगें भी उसकी थक चली थीं । आँखें उसकी गली के बाहर पसरे अंधेरे में खोई थीं। उसके भीतर से बार बार सवाल उपज रहे थे । उन सवालों की भाषा लगभग एक जैसी थी। पर उत्तर नदारद था। सवाल ही सवाल थे। जो उसके मन के साथ बूढ़े हो चले शरीर को कचोट रहे थे।

दाल बन गई थी। सुमन ने बटलोई नीचे रख दी थी। वह रोटियाँ बनाना ही चाहती थी कि बीच में रुक गई। पति के इतने देर गये न लौटने से मन उद्विग्न सा हो उठा। आटा, दाल सभी कुछ छोड़ बाहर आ गई थी। हरदेई अभी भी वहीं थी। माँ को बेटे की प्रतीक्षा जो थी । वैसा ही इंतजार पत्नी को भी था । आकाश का मन भी पढ़ाई में नहीं लग रहा था। थोड़ी देर में वह फिर से बाहर आ गया था । तीनों एक दूसरे के तरफ़ देखते भर थे। सवाल भी करें तो क्या, बार बार वही सवाल। जिनके जवाब भी अधूरे मिलते ।

बस्ती का परिवेश कोलाहल से भरपूर था, पर वे तीनों ही अजीब सी चुप्पी में डूबे थे। किसी टापू पर जैसे अकेले हों। उनके भीतर तरह तरह की आशंकाएँ उभर रही थीं, जो उन्हें विचलित करने लगी थीं । आकाश की आँखें बार बार दी वार की घड़ी की ओर उठ जाती थीं । अब तक नौ बज चुके थे। उसके मन में वही सवाल उठता था। पिताजी अब तक क्यों नहीं आये, वे तो सात बजे तक आ जाते थे। इस बीच सुमन रसोई में दो बार हो आई थी । बड़ी मुश्किल से दो चार घूँट पानी उंडेल पायी थी गले के नीचे । हरदेई टस से मस नहीं हुइ थी। उसकी आँखें अभी भी बाहर से भीतर आने वाले रास्ते पर लगी थीं ।

Vocabulaire (1ère partie)

अंधेरा (m) obscurité
घिरना être entouré
प्रवेश करना entrer
क्रम (m) séquence
दोहराना répéter
प्रतीक्षा (f) attente
शेष reste
उदासी (f) mélancolie
थकान (f) fatigue
परिवेश (m) ambiance, milieu
उमस (f) humidité
मिलीजुली mixte
गूँजना résonner, retentir
खनकना tinter
बर्तन (m) ustensile, récipient
शिकायत (f) plainte
सम्मोहन (m) attraction hypnotique
बैठकखाना (m) salon
दालान (m) véranda, hall
उभरना ressortir, se dégager
बस्ती (f) implantation spontanée d'habitation
स्पंदन (m) vibration
गहमागहमी (f) animation
बीनना ramasser
प्राणी (m), जीव(m) être vivant
चुप्पी (f) साधना devenir silencieux
पेपर (m) (paper) questionnaire, examen
सामान्य ज्ञान (m) connaissance générale
खोना perdre
प्रकाश (m) lumière
व्यवस्था (f) organisation

उजाला (m) lumière
धुआँ (m) fumée
लकीर (f) trait, ligne
एकड़ (m) acre, demi-hectare
अव्यवस्था (m) désorganisation
उबड़ खाबड़ irrégulier
पलास्तर (m) plâtre
उखड़ना se détacher
घोषित déclaré
महसूस करना ressentir
अंगीठी (f) brasier, feu
पतीली (f) casserole, cocotte
घड़ा (m) pot
तिरछा en biais
किसी की बाट जोहना attendre quelqu'un
दिलासा (f) देना consoler
गूंदना/गूँधना malaxer de la farine
गूँथना tresser
उपजना pousser, grandir
नदारद होना disparaître
कचोटना contrarier, tracasser
बटलोई (f) une sorte d'ustensile peu profond
उद्विग्न troublé
अधूरा incomplet
कोलाहल (m) vacarme, tohu-bohu
भरपूर rempli à ras-bord
टापू (m) île
विचलित troublé, dérangé
अनायास soudain, sans effort
छाया (f) ombre
अभ्यस्त habitué